व्यंग्य

वक्रासन

पत्नी बोली आप मुझसे जलते हैं

पत्नी जी बोंली। आप मुझसे जलते हैं। आपका मेरा फोन करना। मेरी बहनों से बात करना अखरता है। मैंने समझाया। प्रिये बात करो फोन पर। लेकिन ये भला क्या बात हुई है, कि तुम फोन पर घँटे दो -दो घँटे बात करती हो। घर के कामकाज का हर्ज हो जाता है। फोन तब मर्ज हो जाता है। क्यों बहनों के साथ- साथ अपना भी दिमाग खराब करती हो। अपने फटे में उनको घुसाती हो। उनका दिमाग तो नहीं अलबत्ता तुम्हारा दिमाग जरुर खराब हो जाएगा। तुम्हारे आसपास के जो लोग हैं। वो दूसरों से मजा लेते हैं। कान देते रहते हैं कि किसी बात का निकले सिलसिला। किसी तरह कटे समय। मुहल्ले की कोई न्यूज ब्रेकिंग न्यूज की तरह चले। लोग सामने से सहानुभूति लेते हैं। पीछे से हँसते हैं। पत्नी बोली कौन सा रोज बात करती हूँ। सप्ताह में एक दिन ही तो बात करती हूँ। अच्छा सप्ताह में एक बार बात करने को कौन मना करता है। हाल समाचार पूछ लो। हाल समाचार पूछने में कितना समय जाता है। एक घर की बात ही तो करनी है। हालचाल ही तो लेना है। जी नहीं एक घर की बात हो तो कुछ बात भी हो। पूरे मुहल्ले का लेना है हालचाल। लेकिन हाल -चाल से जब बात आगे बढ़ जाती है। तो हालत संभालन मुश्किल हो जाता है। इधर की बात उधर। और उधर की बात इधर करने से समस्या बढ़ जाती है। मुँह और कान को आराम दो। इधर की उधर और उधर की इधर करने से दोनों घरों की शाँति भँग हो जाती है। लेकिन मैं तो ज्यादती पर बात करती हूँ।अपने घर में हो रहे बंटवारे पर तकरार करती हूँ। मैंने समझाया किस घर में तकरार और रार नहीं है।क्या हमारे यहाँ रार और तकरार नहीं है। लोग अपने ही फटे को सिलने में लगे हैं। क्यों इधर -उधर फोन करती हो। बहनों को परेशान करती रहती हो। क्यों एक ही रायता हर जगह फैलाती हो। फिर गिरा हुआ रायता उठाती हो। फोन पर बात करने से परेशानी नहीं है। दो दो घँटे बात करने से परेशानी है। आदमी को केवल बात ही नहीं काम भी करना होता है। बार- बार एक ही रायता को साफ करने से क्या मिलेगा। जो बेईमान हैं वो बेईमान ही रहेगा। लोगों की बेईमानी पर आँख अपनी मूँद लो। साँप निकल गया है। लकीर पीटकर क्या होगा। अभी का समय ऐसा ही चल रहा है। जिसको पालो वही काटता है। पत्नी बोली कोई इतना भी दूसरों के मामले में हस्तक्षेप नहीं करता है।जितना तुम मेरे मामले में करते हो। हस्तक्षेप! ये क्या बात हुई भला। ये मेरा अधिकार है। फोन पर तुम दो -दो घँटे बात करो। और मैं हस्तक्षेप भी ना करूँ। धारा तीन- सौ- दो ना हो तो अभी पटाक्षेप करूँ। जब तुम्हारे सुख -दुख का मैं ख्याल रखता हूँ। तो बोलने और डाँटने- डपटने का हक भी रखता हूँ । अब तुम्हारा रजिस्ट्रेशन मेरे साथ हो गया है। तुम्हारे लिए जब सब साधन जुटाता हूँ। तो तुम्हें खुली छूट नहीं दे सकता हूँ। जिनको दो -दो घँटे का समय देती हो। कभी माँगकर दिखाओ उनसे हजार दो- हजार। छूट जाएगा उनको बुखार। और नहीं तो जाकर रहो उनके यहाँ महीने- दो -महीना। छूट जाएगा उनका पसीना।मिलेगा टका सा जबाब। जब किसी चीज का मालिक -मुख्तार नहीं होता है। तब उसको लोग प्राईवेट प्रापर्टी मान लेते हैं ।

महेश कुमार केशरी
बोकारो झारखंड

कहानी

से बेमिसाल बनों

सोनू का मन पढ़ाई में नहीं लगता था द्य पूरा दिन घर से बाहर रहकर खेलता कूदता रहता था द्य स्कूल भी बेमन से जाता था द्य मां भी बहुत चिंतित रहती थी द्य सोचती रहती थी कि मेरा बेटा भी बड़ा होकर किसी लायक बन जाए द्य मेरा भी समाज में नाम हो। लेकिन सोनू पर इन बातों का कोई असर नहीं होता था द्य माँ की बात इधर से सुनता उधर से निकाल देता था द्य एक रोज़ माँ ने सोनू से कहा बेटा अपनी माँ का एक कहना मानोगे द्य सोनू बोला हाँ माँ बोलो द्य क्या बात है द्य मां बोली देखो बेटा हमने सुना है तुम स्कूल नहीं जाते हो द्य स्कूल ड्राप करके इधर उधर घूमने फिरने में समय बर्बाद करते हो द्य स्कूल में अपने क्लास के किसी लड़के का तुमने सिर फोड़ दिया। अब तुम लड़ाई झगड़ा भी करने लगे। सोनू चौक गया जैसे उसकी चोरी पकड़ ली गई हो द्य अपनी सफ़ाई देते हुए सोनू बोला नहीं माँ ऐसी कोई बात नहीं। माँ बोली बेटा ऐसी ही बात है। तुम्हारे क्लास टीचर पता पूछते हुए घर आ पहुंचे। वो शिकायत कर रहे थे तुम्हारी। बस यही दिन देखने को रह गए थे। तुम्हारे पिता की इनकम भी सीमित है द्य कैसे तुमको अपना तन मन काटकर वो तुम्हें पढ़ा रहे हैं द्य माँ रोते हुए बोली। माँ को रोता हुआ देखकर सोनू बोला माँ रो मत। अब हम कभी झगड़ा नहीं करेंगे। समय से स्कूल जाएंगे। और तुम्हारा कहना मानेंगे। माँ ख़ुशी से आँसू पोछते हुए बेटे से बोली। अब कोई ऐसा काम न करना कि समाज में तुम्हारे माँ बाप की नाक कटे। सोनू ठीक है माँ कहकर बाहर चला गया। अगले दिन सोनू सुबह जल्दी उठकर स्कूल की तैयारी करने लगा। माँ को यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि देर से उठने वाला सोनू आज इतनी जल्दी कैसे उठ गया। एक तरफ माँ खुश हो रही थी। दूसरी तरफ माँ के मन में ढेर सारी शंकाएँ भी जन्म ले यही थीं। सोनू नाश्ता पानी करके स्कूल के लिए निकल गया। सोनू ने माँ से तो कह दिया था कि अब हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे। लेकिन सोनू के दिमाग़ में शिकायत करने आए अपने क्लास टीचर के लिए गुस्से का भाव पैदा हो गया था । सोनू क्लास रूम में बैठा हाज़री लगा रहे टीचर को बड़े ही अजीब ढंग से घूर रहा था। टीचर ने सोनू की तरफ देखते हुए कहा। क्या देख रहे हो। किताब निकालो और पढ़ो। टीचर ब्लैक बोर्ड पर कुछ लिखने के लिए जैसे ही मुड़े सोनू ने अपने बस्ते से एक बड़ा सा ईटा निकालकर क्लास टीचर के सिर पर दे मारा। टीचर के सिर से खून बहने लगा। क्लास में अफरा तफरी मच गई। सोनू शिकायत का गुबार निकालकर वहाँ से रफूचक्कर हो गया। बात प्रिंसिपल तक पहुँची। सोनू के घर शिकायत नामा भिजवाया गया। सोनू का नाम स्कूल से तुरंत काट दिया गया द्य सोनू की माँ को जब यह बात पता चली कि सोनू ने अपने क्लास टीचर का सिर फोड़ दिया वो धड़ाम से गिरकर बेहोश हो गई। इधर सोनू के घर में भी शोर गुल शुरू हो गया। जैसे तैसे पिता और पड़ोसियों ने सोनू की माँ को अस्पताल पहुँचाया। सोनू को माँ अस्पताल में है यह खबर जब पता चली तो सोनू रोता हुआ पता लगाते हुए अस्पताल माँ को देखने के लिए जा पहुँचा। माँ सदमे से बाहर आ गई थी द्य माँ को होश आ गया था। माँ आँखे खोले बेड पर लेती थी।सोनू ने मां को जैसे देखा सोनू माँ को चिपटकर दहाड़े मार मारकर रोने लगा। कहने लगा माँ क्या हो गया तुम्हे। हमने तुम्हारा कहना नहीं माना। मुझे माफ कर दो माँ। पश्चाताप के आँसू सोनू की आँख से बह जा रहे थे। माँ तकलीफ में भी बेटे सोनू को सीने से लगाए चुपाते हुए कह रही थी। बेटा रो मत। तुमको तो हम समझाते थे द्य तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो गया है। यही तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी सफलता और खुशी का दिन है। आगे से किसी को अपनी तरफ़ से तकलीफ़ न पहुंचाना द्य माँ और पिता ने सोनू को सीने से लगाते हुए कहा बेटा हमेशा अच्छा काम करना चाहिए। भगवान अच्छा बुरा सब देखता है द्य

आसिम अनमोल
मोहल्ला द्ु अहमदपुर रेती चुंगी
शाहजहांपुर

रोबोट से दिल लगाइए, जिंदगी बनाइए

व्यंग्य

अरण्यरोदन

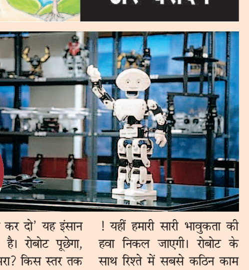

अब तक हमने इंसानों से बातचीत करना ही सीखा था। वह भी पूरी तरह नहीं। किसी से प्यार से बोलना हो तो चेहरे पर मुस्कान लानी पड़ती है, नाराजगी जतानी हो तो आवाज में वजन डालना पड़ता है और घर में पत्नी से बहस हो जाए तो अंत में चुप रहना ही सबसे सुरक्षित विकल्प माना जाता है, लेकिन अब जमाना बदल रहा है।जल्द ही हमारे घरों में रोबोट होंगे। वे हमारे आसपास उसी तरह घूमते नजर आएंगे जैसे घर का कोई सदस्य घूमता है-बस फर्क इतना होगा कि वे चाय पीने के बाद कप सिंक में रखने के बजाय उसे धो भी देंगे। हमने आज तक रोबोट से बातचीत का कोई प्रशिक्षण नहीं लिया है। इंसानों के साथ तो हमने जैसे-तैसे संबंध निभाना सीख लिया, लेकिन मशीन से संबंध कैसे निभाए जाएं, इसकी कोई पारिवारिक परंपरा हमारे पास नहीं है। मान लीजिए आपने रोबोट से कहा, 'भाई, जरा पानी ले आना।' वह कह सकता है, 'कृपया पानी का प्रकार, तापमान और मात्रा बताइए। 'अब आप सोचेंगे, आदमी से कहता तो वह दो गिलास पानी लेकर आ जाता। रोबोट से कहना तो ऐसे लगता है जैसे सरकारी कार्यालय में आवेदन लगा दिया हो। इसलिए भविष्य में सबसे पहली जरूरत होगी, रोबोट से बात करने की कला। आपको यह सीखना पड़ेगा कि रोबोट से आदेश नहीं, संवाद कैसे करें। उसे हर बात पर 'तू कुछ काम का नहीं है' कहेंगे तो वह भावुक नहीं होगा, लेकिन उसका सॉफ्टवेयर जरूर आपकी शिकायत को रिकॉर्ड कर सकता है। इंसान गुस्सा भूल जाता है, मशीन डेटा नहीं भूलती और यहीं इंसान की पुरानी आदतें मुसीबत बनेंगी।हम घर में नौकर से कहते हैं, 'यह काम अभी करो।' पत्नी से कहते हैं, 'अभी तो मैंने कहा था! ' बच्चे से कहते हैं, 'तुम्हें समझ में क्यों नहीं आता?' लेकिन रोबोट से यही भाषा चली तो वह शायद पलटकर पूछ लेगा कि 'आपके आदेश की प्राथमिकता क्या है?' फिर हम सोचेंगे कि हमारे पास इसका कोई जवाब नहीं होगा, क्योंकि हमने खुद अपनी जिंदगी में कभी प्राथमिकताएं तय नहीं कीं। मोबाइल पर नोटिफिकेशन पहले आ गया, वही जरूरी काम हो गया। रोबोट हमें एक और बड़ा सबक देगा, मशीन को स्पष्ट निर्देश चाहिए। 'कमरा ठीक कर दो' यह इंसान समझ सकता है। रोबोट पूछेगा, 'कौन-सा कमरा? किस स्तर तक व्यवस्थित करना है? वस्तुओं का स्थान बदलना अनुमत है या नहीं? ' तब हमें पता चलेगा कि समस्या रोबोट में नहीं, हमारी भाषा में थी। हम इंसानों से भी आधी बातें अधूरी करते हैं और उम्मीद रखते हैं कि सामने वाला हमारे मन की बात समझ ले। रोबोट यह सुविधा नहीं देगा। उसे न इशारे समझ आएंगे, न रूठना, न मनुहार। आप कहेंगे, 'मैं तुमसे नाराज हूं।' तब वह शायद जवाब देगा, 'कृपया नाराजगी का कारण बताएं। ' बस ! यहीं हमारी सारी भावुकता की हवा निकल जाएगी। रोबोट के साथ रिश्ते में सबसे कठिन काम होगा, उसका मन पढ़ना सिखाना क्योंकि मशीन को आपका चेहरा दिख सकता है, आपकी आवाज सुनाई दे सकती है, आपके आदेश समझ में आ सकते हैं, लेकिन आपकी वह चुप्पी नहीं समझ आएगी जिसमें पत्नी का 'कुछ नहीं' छिपा होता है। हालांकि भविष्य में शायद रोबोट इतना समझदार हो जाए कि घर में पति-पत्नी की बहस देखकर वह खुद दूसरे कमरे में चला जाए। यही उसकी सबसे बड़ी कृत्रिम बुद्धिमत्ता होगी। कार्यालयों में भी रोबोट का प्रवेश होगा। आज बॉस ईमेल भेजकर काम देता है, कल रोबोट सीधे आपके सामने खड़ा होकर कह सकता है, 'आपके पास तीन घंटे का लंबित कार्य है।' आप कहेंगे, 'आज मूड नहीं है।' शायद रोबोट हमारे समय प्रबंधन का सबसे कठोर शिक्षक बन जाए। बस, यहीं इंसान की असली परीक्षा होगी। हम रोबोट को घर का काम सौंपेंगे और बदले में उससे यह उम्मीद भी करेंगे कि वह हमारा तनाव कम करे। लेकिन इसके लिए पहले हमें अपनी अपेक्षाओं को व्यवस्थित करना पड़ेगा। रोबोट को नौकर समझेंगे तो संबंध आदेश और विरोध का बन जाएगा। उसे सहयोगी समझेंगे तो काम आसान होगा। कल तक हम कहते थे, 'समय नहीं है। ' कल रोबोट कहेगा, 'समय आपके पास है, आपने उसका उपयोग नहीं किया।

'और तब शायद हमें पहली बार एहसास होगा कि जिंदगी की सबसे बड़ी कमी समय की नहीं, समय के सही इस्तेमाल की है। रोबोट हमारे कपड़े धो देगा, खाना बना देगा, घर साफ कर देगा, सामान ला देगा और शायद बच्चों का होमवर्क भी करा देगा। लेकिन एक काम वह शायद कभी नहीं कर पाएगा, हमारे भीतरी मन और उसके भावों की अव्यवस्था साफ करना। उसके लिए अभी भी इंसान को खुद ही मेहनत करनी पड़ेगी, इसलिए रोबोट आने से पहले हमें रोबोट से बात करना सीखना चाहिए। उसे आदेश देने से पहले अपनी बात स्पष्ट करना सीखना चाहिए। उससे नाराज होने से पहले अपनी अपेक्षा समझनी चाहिए। और सबसे जरूरी, मशीन से काम लेते समय इंसानियत को मशीन नहीं बनने देना चाहिए। आने वाले समय में घर में रोबोट होगा, हाथ में मोबाइल होगा, जेब में कृत्रिम बुद्धिमत्ता होगी और चारों तरफ तकनीक होगी। बस! डर यही है कि कहीं इन सबके बीच इंसान ही आउटडेटेड न हो जाए। इसलिए बात छोटी-सी है, रोबोट से दिल लगाने के साथ-साथ उससे तालमेल जरूर बैठाइए। यदि उससे मन मिल जाए तो जिंदगी आसान होगी और अगर मनमुटाव हो गया तो शिकायतें भी किससे करेंगे, रोबोट से या उसके सर्विस सेंटर से? आखिर आने वाला जमाना मशीनों का हो सकता है, लेकिन जिंदगी का मजा तभी रहेगा जब मशीनें काम करें और इंसान जीना न भूलें।

डॉ. मनीष दवे, महालक्ष्मी नगर, इंदौर

कहानी

राधिका घर की लक्ष्मी

रामू खेत में मजदूरी करता था, पर सोच मजदूरों वाली नहीं थी। उसकी पत्नी समित्रों कहती थी कि एक अपनी जमीन नहीं है तो क्या, बच्चों को सोच की जमीन तो दे सकते हैं। उसी जमीन पर उनका इकलौता बेटा राजेश्वर बड़ा हुआ। दो बहनें बड़ी मुस्कान और छोटी निहारिका, भाई को ही अपना हीरो मानती थीं। राजेश्वर की सुबह चार बजे शुरू होती थी। बापू के साथ खेत में जाना, घास काटना, पानी लगाना, फिर उसी मेड़ पर चादर बिछाकर किताब खोल लेना। हाथों में दरांती के छाले और बस्ते में किताबें दोनों साथ चलते थे। लोग हँसते थे कि खेत वाला बाबू बनेगा? स्कूल में ही उसकी जिंदगी में जानवी आई। क्लास की सबसे समझदार लड़की। जानवी राजेश्वर से बेइंतहा प्यार करती थी, राजेश्वर भी। दोनों ने एक कच्चे घर में बड़े सपनों की बातें की थीं। पर जानवी के कुछ रिश्तेदार बीच में आ गए। उन्होंने कहा कि लड़का अच्छा है पर घर बड़ा नहीं है, बाप खेतिहर मजदूर है, बिरादरी में इज्जत क्या रहेगी जानवी चाहकर भी लड़ नहीं पाई। रिश्ता टूट गया। राजेश्वर टूटा नहीं, उसने कसम खाई कि खेत छोटा है तो क्या, नाम इतना बड़ा करूंगा कि घर खुद बड़ा लगने लगेगा। मैं अपनी पिछली और अगली दोनों पीढ़ियों का नाम रोशन करूंगा। फिर तपस्या शुरू हुई। दिन में खेत में काम और रात में लालटेन तले पढ़ाई। तीन साल

में उसने न सिर्फ खुद सरकारी नौकरी ली, बल्कि अपनी दोनों बहनों को भी अपने पैरों पर खड़ा किया। आज मुस्कान टीचर है, निहारिका बैंक में। एक खेत मजदूर के घर से तीन-तीन नौकरियां रामू और समित्रों का सीना गर्व से चौड़ा हो गया। पूरा शहर कहने लगा कि रामू ने बेटे नहीं, हीरे पैदा किए हैं। फिर रामू ने उसके लिए राधिका देखी। गरीब घर की, पर आँखों में वही चमक जो समित्रों में थी। राजेश्वर ने राधिका से शादी की। राधिका ने कभी नहीं पूछा कि तुम्हारा पहला प्यार कौन था। उसने बस राजेश्वर के अधूरे सपनों को अपना बना लिया। आज दस साल हो गए, राधिका ने उस कच्चे घर को मंदिर बना दिया है। रामू और समित्रों आज अपनी बहू से बहुत खुश हैं, कहते हैं कि हमें बहू नहीं, लक्ष्मी मिली है। आज शहर में जब इज्जतदार लोगों की गिनती होती है, तो राजेश्वर का नाम सम्मान से लिया जाता है। क दिन की बात है सात साल बाद, एक बारिश वाला दिन और दोनों की अचानक मुलाकात हुई। हुआ यूं कि सावन की झमाझम बारिश थी। राजेश्वर यूनिवर्सिटी में अपनी बहन के एडमिशन के काम से गया था। बारिश से बचने के लिए वो दौड़कर कैंटीन में घुसा। और सामने वाली बेंच पर जानवी बैठी थी। दोनों की आँखें अचानक आपस में टकराईं। सात साल का वक्त वहीं थम गया। आज तक जब भी दोनों बाजार में मिलते थे, जानवी राजेश्वर को देखकर नजरें घुमा लेती थी, पर आज नहीं घुमा पाई।ज ानवी की आँखें भर आईं। उसने कांपती आवाज में कहा बैठोगे राज? दोनों एक कोने में बैठ गए। दो कटिंग चाय आई। बाहर टीन की छत पर बारिश बज रही थी, और अंदर दोनों की आँखों में आंसू थे। क्योंकि दोनों जानते थे, प्यार आज भी उतना ही सच्चा है। बहुत देर की खामोशी के बाद, चाय का कप हाथ में पकड़े हुए राजेश्वर ने जानवी को देखते हुए धीरे से कहा कि वो कहते हैं न जानवी, जो किस्मत में लिखा हो,वो ही होता है। जानवी कुछ न बोली, बस आंसू पोंछती हुई चाय पीती रही। कुछ प्यार किस्मत में नहीं होते, पर उम्र भर दिल में इज्जत बनकर रहते हैं।

राज कुमार 'राज़

कहानी

साइलेंट

शाम को दवा तो ले ली थी, मगर सुबह होते-होते सुधाकर की धड़कनें फिर बेकाबू होने लगीं। पिछली रात ही विवान से बात हुई थी। इतनी दूर का सफर बस से करने पर सुधाकर ने आपत्ति भी जताई थी, मगर बेटे ने आश्वस्त कर दिया था। देर रात प्यास लगी तो पानी पीने के बाद सुधाकर ने विवान को फोन लगाया।

एक-दो घंटियाँ बजीं और फिर फोन टूँ-टूँ करता कट गया। फोन का यूँ मुँह मोड़ लेना उनकी धड़कनें बढ़ाने के लिए काफी था। करवटें बदलते हुए रात आँखों की नमी के सहारे कट गई।

सूरज चढ़ आया था। अब तक तो विवान को घर पहुँच जाना चाहिए था! सुधाकर की आँखें बार-बार मोबाइल की स्क्रीन पर टिक जातीं। न फोन उठ रहा था, न संदेश का जवाब आ रहा था। हर गुजरते पल के साथ उनकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

'जब मोबाइल को साइलेंट ही रखना है, तो पास रखने का क्या अर्थ?' बुदबुदाते हुए उन्होंने दवा निगल ली। तभी एक ऑटो घर के सामने आकर रुका। विवान को देखते ही सुधाकर की साँस में साँस आई। सुधाकर ने बेटे को सीने से लगाते हुए ...भर्राए स्वर में बोला, 'बेटा, मोबाइल साइलेंट रखना, मगर इतना भी नहीं कि पिता की धड़कनें ही अनसुनी रह जाएँ! '

विजय सिंह चौहान

इंतज़ार करते-करते उम्र हो गई

व्यंग्य

तीसरी आँख

उन्होंने प्रदेश के मुखिया को पत्र लिखकर चिंता जताई है कि इंतज़ार करते-करते कई युवाओं की उम्र हो गई। बात बिल्कुल सही है। इसमें भला असहमति की गुंजाइश ही कहाँ रह जाती है? युवा आखिर कब तक इंतज़ार करें? युवा का इंतज़ार द्रौपदी का चिर तो है नहीं जिसके लिए कोई श्रीकृष्ण दौड़े चले आएं!युवा की मजबूरी भी क्या बला की ठहरी,वह नौकरी के लिए आवेदन करे, परीक्षा की तैयारी करे, परीक्षा की तारीख का इंतज़ार करे, परीक्षा दे तो परिणाम का इंतज़ार करे, परिणाम आए तो नियुक्ति का इंतज़ार करे और नियुक्ति की आस में देखते-देखते उम्र निकल जाए,इसे रोजगार की प्रक्रिया कहें या इंतज़ार की कोई सरकारी योजना?और अंत में वही 'करूं क्या आस-निरास भई!' अब युवाओं को रोजगार चाहिए। रोजगार भी ऐसा, जिसमें भविष्य दिखाई दे। और अगर रोजगार सरकारी हो तो फिर क्या कहने! सुनहरा भविष्य तो सरकारी नौकरी में ही है।सरकारी नौकरी ही एक ऐसा अवसर उपलब्ध कराती है जिसमें अर्निंग के दो सोर्स पक्के रहते हैं! इसमें नौकरी के साथ तनख्वाह, सुरक्षा, सुविधाएँ और सामाजिक प्रतिष्ठा भी सुरक्षित। इसलिए युवा सरकारी नौकरी के पीछे भागते हैं और सरकारें खाली पड़े सरकारी पदों को दिखाकर लॉलीपॉप लिये घुमती रहती है। सरकारें बरसों-बरस पद खाली पड़े रहने देती हैं। पदों को जैसे किसी विशेष संरक्षण की आवश्यकता हो। वे रिक्त रहते हैं, सुरक्षित रहते हैं और अपनी रिक्तता पर वर्षों तक गर्व करते रहते हैं। इधर युवा हैं कि रिक्त पदों को भरने के लिए अपनी जवानी खाली करते जा रहे हैं। सरकारी तंत्र में पद खाली रहने का भी अपना गणित है। कभी भर्ती प्रक्रिया चल रही होती है, कभी प्रक्रिया शुरू होने वाली होती है, कभी नियमों में संशोधन होना होता है, कभी आरक्षण का हिसाब बैठाना होता है, कभी विभाग से जानकारी माँगी जाती है और कभी जानकारी आने का इंतज़ार होता है। इस बीच कैलेंडर बदलते रहते हैं, सरकारें बदल जाती हैं, अधिकारी बदल जाते हैं, भर्ती की शर्तें बदल जाती हैं, लेकिन बेचारे युवाओं की स्थिति नहीं बदलती। उनकी उम्र जरूर बदल जाती है।युवा से प्रौढ़ और प्रौढ़ से बुढ़े! जिस उम्र में हाथ में नियुक्ति-पत्र होना चाहिए, उस उम्र में उनके हाथ में प्रतियोगी परीक्षाओं की किताबें होती हैं। जिस उम्र में वेतन से घर चलना चाहिए, उस उम्र में वे आवेदन शुल्क जुटा रहे होते हैं। जिस उम्र में परिवार वाले विवाह की चिंता करते हैं, उस उम्र में युवा अपनी आयु सीमा की चिंता करने लगते हैं। और सबसे बड़ी विडंबना यह कि सरकार के पास पद होते हैं, काम भी होता है, कर्मचारी कम भी होते हैं, फिर भी पद खाली रहते हैं। काम इंतज़ार करता है, पद इंतज़ार करते हैं और युवा भी इंतज़ार करते हैं। बस फर्क इतना है कि पदों का इंतज़ार कभी बूढ़ा नहीं होता, युवाओं का इंतज़ार जरूर बूढ़ा हो जाता है। अब उन्होंने युवाओं की इस पीड़ा को महसूस किया है। प्रदेश के मुखिया को पत्र लिखकर उन्होंने बता दिया है कि इंतज़ार बहुत हो चुका। युवाओं की उम्र निकल रही है। सरकार को कुछ करना चाहिए। बात में दम है।आखिर युवाओं का दुःख उनका दुःख है। उनकी पीड़ा युवाओं की पीड़ा है। भला युवाओं की पीड़ा उनसे ज्यादा और कौन देख और समझ सकता है? उन्होंने भी तो वर्षों से इंतज़ार की राजनीति की है। कभी सत्ता में आने का इंतज़ार, कभी बहुमत का इंतज़ार, कभी अवसर का इंतज़ार और कभी सरकार के किसी निर्णय में अपना राजनीतिक अवसर तलाशने का इंतज़ार। इसलिए वे जानते हैं कि इंतज़ार आदमी को कितना बेचैन करता है। युवाओं को भी अब शायद यह समझ लेना चाहिए कि केवल नौकरी का इंतज़ार करना पर्याप्त नहीं है। उन्हें यह भी देखना चाहिए कि नौकरी के अवसर पैदा करने वाले कौन हैं और उन्हें रोककर रखने वाले कौन। चुनाव के समय रोजगार सबसे लोकप्रिय शब्द होता है। घोषणापत्रों में वह मोटे अक्षरों में छपता है, भाषणों में तालियाँ बटोरता है और चुनाव बीतते ही फाइलों में जाकर आराम करने लगता है। युवा फिर इंतज़ार करने लगते हैं।कभी विज्ञापन का, कभी परीक्षा का, कभी परिणाम का, कभी नियुक्ति का। और जब इंतज़ार करते-करते उनकी उम्र निकल जाती है तो कोई उनके लिए चिंता जताते हुए पत्र लिख देता है।पत्र लिखना भी जरूरी है। आखिर चिंता व्यक्त करने का अपना महत्व है। इससे कम-से-कम यह तो पता चलता है कि किसी को युवाओं की चिंता है। मगर चिंता अगर पत्र से निकलकर नीति तक पहुँचे, नीति से निकलकर भर्ती तक पहुँचे और भर्ती से निकलकर नियुक्ति-पत्र तक पहुँचे, तभी युवा मानेंगे कि उनकी चिंता वास्तव में की जा रही है।वरना चिंता तो बहुत लोग करते हैं।

डॉ प्रदीप उपाध्याय
16,अंबिका भवन, उपाध्याय नगर, मेंढकी रोड, देवास म.प्र. 455001
9425030009(मो)